व्यंग्य लेखन की परंपरा और आधुनिक संदर्भ

डॉ. मुक्ता अग्रवाल
सहायक प्राध्यापक 'हिन्दी', शा. के.आर.जी.महाविद्यालय
ग्वालियर म.प्र.

सारांश - व्यंग्य लेखन हिंदी साहित्य की एक महत्वपूर्ण विधा है, जो समाज की विसंगतियों और विरोधाभासों को हास्य एवं कटाक्ष के माध्यम से उजागर करता है। यह केवल मनोरंजन का साधन नहीं, बल्कि सामाजिक चेतना और परिवर्तन का उपकरण भी है। प्रस्तुत शोधपत्र में व्यंग्य लेखन की परंपरा का ऐतिहासिक विश्लेषण किया गया है और समकालीन संदर्भों में इसकी प्रासंगिकता को समझाने का प्रयास किया गया है। इस अध्ययन का यह निष्कर्ष है कि व्यंग्य साहित्य का प्राचीन काल से आधुनिक काल तक निरंतर विकास हुआ है। यह साहित्य आज भी उतना ही प्रासंगिक है जितना कि पूर्व में रहा है, बल्कि वर्तमान सामाजिक-राजनीतिक परिस्थिति में इसकी उपयोगिता और बढ़ गई है।

शोध समस्या - हिंदी साहित्य में व्यंग्य लेखन की परंपरा प्राचीन काल से चली आ रही है, किंतु आधुनिक समय में बदलते सामाजिक-राजनीतिक परिदृश्य ने व्यंग्य को नए आयाम दिए हैं। अत: प्रश्न उठता है कि –

हिन्दी साहित्य में व्यंग्य लेखन की परंपरा कैसे विकसित हुई?

आधुनिक संदर्भों में व्यंग्य की भूमिका और प्रभाव क्या है?

क्या आज व्यंग्य केवल हँसी तक सीमित है या सामाजिक परिवर्तन का साधन भी बना हुआ है?

शोध उद्देश्य -

- व्यंग्य लेखन की ऐतिहासिक परंपरा का अध्ययन करना।
- आधुनिक हिंदी साहित्य में व्यंग्य के स्वरूप और प्रवृत्तियों का विश्लेषण।
- प्रमुख आधुनिक व्यंग्यकारों के योगदान को स्पष्ट करना।
- व्यंग्य की सामाजिक प्रासंगिकता और समकालीन महत्व को समझना।

कार्यविधि -

यह शोध अध्ययन गुणात्मक (Qualitative) पद्धति पर आधारित है। इसमें साहित्य समीक्षा (Literature Review) द्वारा व्यंग्यकारों की रचनाओं का विश्लेषण किया गया। साथ ही तुलनात्मक दृष्टिकोण (Comparative Approach) से परंपरा और आधुनिकता के बीच व्यंग्य की प्रवृत्तियों को समझने का प्रयास किया गया।

शोध पत्र -

हिंदी साहित्य भारतीय समाज और संस्कृति का जीवंत दर्पण है। यह केवल भावनाओं और संवेदनाओं की अभिव्यक्ति नहीं, बल्कि सामाजिक विसंगतियों, मानवीय दुर्बलताओं और राजनीतिक विडंबनाओं पर तीखी दृष्टि डालने की परंपरा भी है। यहाँ साहित्य का उद्देश्य केवल रसाभिव्यक्ति या मनोरंजन नहीं, बल्कि समाज को सही दिशा देना भी है। साहित्यकार अपने समय की परिस्थितियों का न केवल चित्रण करता है, बल्कि उनमें सुधार की चेतना भी जगाता है। यही कारण है कि साहित्य में व्यंग्य विधा का विशेष महत्व है।

व्यंग्य हास्य से भिन्न है। हास्य केवल मनोरंजन का साधन हो सकता है, लेकिन व्यंग्य केवल हँसाने का साधन नहीं है। यह हँसते-हँसते चुभता है, विचार करने को बाध्य करता है और सुधार की प्रेरणा देता है। व्यंग्य का उद्देश्य मनोरंजन से आगे बढ़कर समाज की बुराइयों पर प्रहार करना है, इसीलिए इसे 'साहित्य की सर्जनात्मक आलोचना' भी कहा जाता है।

हिंदी साहित्य में व्यंग्य का उद्भव किसी विशेष युग की देन नहीं है, बल्कि यह विभिन्न युगों एवं कालखंडों में अलग-अलग रूपों में प्रकट होता रहा है। कबीर के निर्भीक वचनों से लेकर परसाई और शरद जोशी की चुटीली लेखनी तक, व्यंग्य हिंदी साहित्य की एक अनिवार्य धारा रही है।

यदि हम हिन्दी के प्रारंभिक काल- आदिकाल की बात करें जो यहाँ व्यंग्य का बीज रूप दिखायी देता है। यह काल वीरगाथा काव्य के लिए प्रसिद्ध है, जिसमें मुख्यतः राजाओं और वीरों के पराक्रम का वर्णन हुआ। फिर भी इस युग में व्यंग्य की कुछ झलकियाँ मिलती हैं। इस काल में रचित अपभ्रंश साहित्य में ढोंगी साधुओं और समाज की विसंगतियों पर कटाक्ष किया गया है। इस प्रकार, आदिकाल में व्यंग्य धार्मिक आडंबर और सामाजिक कुरीतियों तक सीमित रहा।

हिंदी साहित्य के भक्तिकाल का प्रमुख स्वर भक्ति और प्रेम था, किंतु व्यंग्य भी यहाँ उपस्थित रहा। हिंदी के प्रसिद्ध कवि कबीरदास को हिंदी व्यंग्य का प्रणेता कहा जाता है। उन्होंने धार्मिक पाखंड, मूर्तिपूजा, जातिगत भेदभाव, समाजिक कुरीतियों और सामाजिक अव्यवस्थाओं पर तीखा व्यंग्य किया है। उदाहरणार्थ :- "कांकर पाथर जोड़ि के मस्जिद लई बनाय, ता चढ़ि मुल्ला बाँग दे, बहरा हुआ खुदाय?" अथवा "पाहन पूजे हरि मिले तो मैं पूँजू पहाड़।'' तुलसीदास ने भी 'रामचरितमानस' में मनुष्य की लोभ-लालसा, पाखंड और मिथ्या आचरण पर व्यंग्य किया। सूरदास ने भी दरबारी चाटुकारिता और दंभ पर संकेत किए है। रैदास, दादू और नामदेव जैसे संतों ने भी समाज की विषमताओं पर व्यंग्यपूर्ण स्वर अपनाया। अत: भक्तिकालीन संत कवियों ने समाज को सुधारने के लिए सीधी और बेबाक भाषा का प्रयोग किया हैं, जिससे उनके व्यंग्य की धार और भी तीखी हो गयी है।

यद्यपि रीतिकाल को श्रंगार और दरबारी काव्य का युग माना जाता है, इसके अधिकांश कवि राजाश्रय प्राप्त थे, इसलिए यहाँ खुला व्यंग्य कम दिखाई देता है। फिर भी कई कवियों ने अपने समय के नकली नायकों, झूठे आदर्शों, दरबारी जीवन और खोखली भव्यता पर कटाक्ष किए है। जैसे- भूषण ने औरंगज़ेब पर तीखे व्यंग्य किए। हालाँकि यह युग व्यंग्य की दृष्टि से कमजोर रहा, फिर भी आलोचनात्मक स्वर यहाँ पूरी तरह अनुपस्थित नहीं था।

आधुनिक हिन्दी साहित्य की शुरुआत भारतेंदु हरिश्चंद्र से मानी जाती है। इस काल में हिंदी गद्य और पत्रकारिता के विकास ने व्यंग्य को नई ऊर्जा प्रदान की। भारतेन्दु हरिश्चंद्र ने सामाजिक-राजनीतिक व्यंग्य को हिंदी नाट्य साहित्य में स्थापित किया तथा अपने नाटकों, कविताओं और हास्य-व्यंग्यों के माध्यम से हास्य और व्यंग्य से भरपूर सामाजिक जागरूकता और आधुनिकता का परिचय दिया। उनका नाटक 'अंधेर नगरी' तत्कालीन राजसत्ता और प्रशासन की नीतियों पर सीधा व्यंग्य है। 'भारत दुर्दशा' में उन्होंने भारतीय समाज की कमजोरी और गुलामी की मानसिकता पर करारा प्रहार किया। उस समय के प्रसिद्ध साहित्यकार प्रतापनारायण मिश्र के निबंध सामाजिक आलोचना और हास्य-व्यंग्य से भरपूर हैं। बालमुकंद गुप्ता की लेखन शैली के अभिन्न अंग हास्य और व्यंग्य थे। उनका हास्य-व्यंग्य अत्यंत रूखा और तीखा था। लॉर्ड कर्जन की भारत विरोधी राजनीति से क्रोधित होकर उन्होंने 'शिव शंभू का चिठ्ठा' नामक व्यंग्य लिखा। इसका उदाहरण दृष्टव्य है - "क्या सांपों को देवता के रूप में पूजने वाला देश नागपंचमी पर भगवान कर्जन को भी शुभकामनाएं नहीं दे सकता?" प्रसिद्ध उपन्यासकार प्रेमचंद ने अपने उपन्यासों और

कहानियों में गहरे सामाजिक व्यंग्य प्रस्तुत किये है। उनकी कफन, पूस की रात, नमक का दरोगा आदि कहानियाँ केवल सामाजिक यथार्थ का ही नहीं, बल्कि उस यथार्थ की विडंबनाओं का व्यंग्यात्मक चित्रण भी हैं।

हिन्दी गद्य के विकास के इस चरण में व्यंग्य का जो स्वरूप उभरकर सामने आया, उसमें विषयवस्तु की विविधता, तीव्रता और लेखक के उद्देश्य का सार झलकता है। इस समय के लेखकों का खुलापन, व्यंग्यात्मक क्षमता और विषय की गंभीरता यह स्पष्ट करती है कि इस समय के लेखकों के लिए लेखन केवल विलासिता का प्रतीक नहीं था बल्कि वे अपने कर्तव्यों का पालन भी गंभीरता से करते थे। इस काल के व्यंग्य में हास्य के दर्शन कम होते है, जिसका मुख्य कारण यह है कि यह साहित्य स्वाभाविक रूप से सामाजिक आलोचना और तीव्र प्रतिक्रियाओं की अभिव्यक्ति का साधन था। द्विवेदी युग में आचार्य महावीर प्रसाद द्विवेदी ने भाषा के एक रूप का विकास किया। इस काल के लेखकों, बाबू गुलाबराय, अन्नपूर्णानन्द शर्मा, हरिशंकर शर्मा और बेढब बनारसी आदि की रचनाओं का उद्देश्य दृश्य रूप में हास्य पैदा करना था लेकिन परोक्ष रूप से राजनीति और समाज के विरोधाभासों पर व्यंग्य करना था।

स्वतंत्रता आंदोलन के समय यही व्यंग्य राजनीतिक चेतना का माध्यम बना। विभिन्न कवियों और लेखकों ने ब्रिटिश शासन की नीतियों और भारतीय जनता की निष्क्रियता पर व्यंग्यपूर्ण लेखन किया। 'हंस' और 'कर्मभूमि' जैसी पत्रिकाओं और उपन्यासों ने जनता में नई चेतना जगाई। अत: इस दौर का व्यंग्य केवल हँसाने के लिए नहीं था, बल्कि जनजागरण और राष्ट्रनिर्माण के लिए प्रयुक्त हुआ।

स्वतंत्र भारत व्यंग्य साहित्य का स्वर्णकाल माना जाता है। स्वतंत्रता के बाद समाज में बढ़ता भ्रष्टाचार, राजनीति का पतन, नौकरशाही की जटिलता, अवसरवाद, प्रशासनिक अव्यवस्था और सामाजिक असमानता व्यंग्य का मुख्य विषय बने। आज़ादी से पहले विभिन्न पत्र-पत्रिकाओं में लिखे जाने वाले हास्य और व्यंग्य स्तंभ अब नियमित रूप से लिखे जाने लगे और भारतीय साहित्य की एक दुर्लभ निधि बन गये। हरिशंकर परसाई के प्रसिद्ध स्तम्भ लेख 'कबीर खड़ा बाजार में' को इसी श्रेणी में रखा जा सकता है। हरिशंकर परसाई हिंदी के "व्यंग्य सम्राट" कहे जाते है। उनकी रचनाएँ 'वैष्णव की फिसलन', 'पगडंडियों का जमाना', 'तब की बात और थी' आदि भारतीय राजनीति और समाज की विडंबनाओं पर तीखा प्रहार करती हैं। साथ ही उनकी रचनाएँ राजनीति, समाज और संस्कृति के अनेक विरोधाभासों और विकृतियों को उजागर करती है। इसके अलावा परसाईजी आम जनता की उदासीनता और अनावश्यक सहनशीलता का भी उपहास करते है। उन्होंने अपनी कहानी 'चूहा और मैं' में यह बताने की कोशिश की है कि एक चूहा भी रोटी के अधिकार के लिए इंसान को सोने से रोकता है, लेकिन इंसान अपने अधिकार के लिए लड़ भी नहीं सकता। परसाई जी में उन स्थितियों में भी विडम्बना और विकृति को पहचानने की अद्भुत क्षमता है, जिन्हें लोग सामान्य मानते हैं।

हिंदी साहित्य के एक और प्रसिद्ध लेखक शरद जोशी ने अंधों का हाथी और अन्य लेखों में आधुनिक जीवन के बेतुकेपन को व्यंग्यात्मक ढंग से प्रस्तुत किया है। उनके व्यंग्य आज भी न केवल पाठक को आनंदित करते हैं, बल्कि यह भी सोचने पर मजबूर कर देते हैं कि लेखक ने जो कहा, उसमें हमें सच्चाई क्यों नजर नहीं आई? जोशीजी की लेखन शैली अत्यंत आकर्षक एवं विविध है। उनकी लेखनी में भाषा का चुटीलापन और गहरी व्यंग्यात्मक दृष्टि मिलती है। उन्होंने हास्य और व्यंग्य के बीच की रेखाओं को धुंधला कर दिया और एक अनोखी शैली के साथ गंभीर विचारों को बेहद हल्के-फुल्के अंदाज में पेश करने का सफल प्रयोग किया है।

इस काल के श्रीलाल शुक्ल का उपन्यास 'राग दरबारी' हिंदी का श्रेष्ठ व्यंग्यात्मक उपन्यास

माना जाता है, जिसमें लोकतंत्र और ग्रामीण समाज की विसंगतियों का सजीव चित्रण किया गया है। यह आधुनिक भारतीय ग्रामीण जीवन की निरर्थकता को परत दर परत उजागर करता है। इसी क्रम में केशवचंद्र वर्मा ने व्यंग्य कहानियाँ और निबंध लिखकर इस स्वतंत्र विधा को नया आयाम प्रदान किया। व्यंग्य में लिखा गया उनका उपन्यास 'किस्सा काठ का उल्लू' बहुत प्रसिद्ध है। 'बलकम खुद' में नामवर सिंह के लेखों की भाषा भी टेढ़ी-मेढ़ी और व्यंग्य से भरी हुई है। कृष्ण चंदर ने अपने गद्य में यथार्थवादी व्यंग्य का प्रयोग किया है।

हिन्दी लेखकों के अतरिक्त हिंदी के प्रसिद्ध कवियों ने भी विसंगतियों पर अपने विचार व्यक्त करने के लिए इस हास्य और व्यंग्य शैली का उपयोग किया है। श्री के.पी. सक्सेना की रचनाएँ ज्यादातर कवि सम्मेलन के मंच पर ही सुनी जाती थीं, लेकिन यहाँ हम गंभीर सामाजिक मुद्दों को अप्रत्याशित ताजगी के साथ देख सकते हैं।

आधुनिक व्यंग्य के परिदृश्य में अशोक गौतम उन लेखकों में प्रमुख व्यक्तित्व है जिन्होंने लगातार व्यंग्य रचना की है और उसे विषय-वस्तु, भाषा और तकनीक की दृष्टि से समृद्ध किया है। उनका हास्य देश भर की विभिन्न पत्रिकाओं में प्रकाशित होता रहता है। अत्यंत संवेदनशीलता, गहराई और कलात्मकता के साथ, उनके हास्य लेख समाज की वास्तविकता को उजागर करते हैं, जिसमें वे आम और परोपकारी लोगों के रक्षक बनने की पूरी कोशिश करते हैं। व्यंग्यकार अशोक गौतम ने कई व्यंग्य लेखों में राजनीति, सरकार और समाज में व्याप्त भ्रष्टाचार की परतें खोली हैं। उप-श्रृंखला 'गधे ने जब मुँह खोला', 'बायोडाटा और आशीर्वाद का छता', उप-श्रृंखला 'लठमेव जयते', 'यमलोक में भ्रष्टाचार शुरू', 'चलो भ्रष्ट बनें', उप-श्रृंखला हास्य लेख जैसे- 'पुलिस स्टेशन में नकली लाओ, देश बचाओ' के अंतर्गत इस दृष्टि से जुटे रहो मुन्ना भाई और भ्रष्टाचार की पाठशाला महत्वपूर्ण हैं। उन्होंने सामाजिक समस्याओं और रोजमर्रा की घटनाओं के माध्यम से लोगों के दर्द और गुस्से को व्यक्त किया। इसके अलावा रवीन्द्रनाथ त्यागी, ज्ञान चतुर्वेदी, राही मासूम रज़ा, गुणाकर मुले, लक्ष्मी नारायण लाल आदि कई हिंदी लेखकों ने अपने लेखन कौशल से समाज और राजनीति के अंतर्विरोधों को उजागर किया तथा व्यंग्य को अपनी रचनाओं का मूल बनाकर लोगों की चेतना को जगाने का काम किया है।

यदि हम समकालीन हिंदी साहित्य की ओर दृष्टिपात करे तो पाते है कि आज के समय में व्यंग्य की धार और भी प्रखर हो गई है। समकालीन व्यंग्य का केंद्र भ्रष्टाचार, उपभोक्तावाद, शिक्षा व्यवस्था, मीडिया की भूमिका, राजनीति का नकारात्मक स्वरूप और बदलती जीवनशैली है। समाचार पत्रों के स्तंभ, पत्र-पत्रिकाओं में प्रकाशित व्यंग्य रचनाएँ और सोशल मीडिया पर लिखे जा रहे व्यंग्य इस विधा की व्यापक लोकप्रियता को प्रमाणित करते हैं। कवि सम्मेलनों में व्यंग्य कविता अत्यंत लोकप्रिय है। आज के दौर में व्यंग्य केवल पुस्तकों तक सीमित नहीं, बल्कि अखबार, टीवी, सोशल मीडिया और इंटरनेट पर भी प्रचलित है। कार्टून, मीम्स, व्यंग्य लेख और स्टैंड-अप कॉमेडी इसके नए रूप हैं। आज के व्यंग्य में भाषा में सरलता और कटाक्ष का संयोजन, राजनीति, उपभोक्तावाद, मीडिया और शिक्षा व्यवस्था की आलोचना, पाठक/दर्शक को हँसाते हुए गहरी सोच की ओर प्रवृत्त करना एवं समाज के विरोधाभासों का यथार्थ चित्रण हमें दिखायी देता हैं।

निष्कर्षत: व्यंग्य लेखन की परंपरा प्राचीन से आधुनिक काल तक सतत रूप से प्रवाहमान रही है। प्राचीन काल में यह धार्मिक और सामाजिक पाखंड पर प्रहार करता था; मध्यकाल और आधुनिककाल में यह समाज और राजनीति की विसंगतियों को सामने लाता रहा। आज व्यंग्य मीडिया और डिजिटल मंचों पर नई शक्ति के रूप में उभर रहा है और हिंदी साहित्य की सबसे सशक्त और प्रासंगिक विधाओं में गिना जाता है। यह केवल हँसी का माध्यम नहीं,

बल्कि सामाजिक चेतना को जगाने और परिवर्तन की राह दिखाने वाला साहित्यिक उपकरण है। हँसी के पीछे छिपी उसकी चुभन समाज को आत्ममंथन के लिए बाध्य करती है। यही व्यंग्य की वास्तविक शक्ति है।

मुख्य शब्द -
व्यंग्य लेखन, हिंदी साहित्य, परंपरा और आधुनिकता, सामाजिक विसंगतियाँ, हास्य और कटाक्ष, हरिशंकर परसाई, शरद जोशी, रवींद्रनाथ त्यागी, समकालीन व्यंग्य, साहित्य और समाज।

संदर्भ ग्रंथ सूची -

[1] सिंह, नामवर, आधुनिक हिंदी साहित्य की प्रवृत्तियाँ।
[2] त्रिपाठी, हरिनारायण, हिंदी व्यंग्य साहित्य का विकास।
[3] परसाई, हरिशंकर, सदाचार का ताबीज, राजकमल प्रकाशन।
[4] जोशी, शरद, व्यंग्य समय, किताबघर प्रकाशन।
[5] जनमेजय, प्रेम, व्यंग्य का समकालीन परिदृश्य, ग्रन्थ लोक, दिल्ली।
[6] मजीठिया, सुर्दशन, समकालीन हिन्दी व्यंग्य एक परिदृश्य, शान्ति प्रकाशन।
[7] त्यागी, रवींद्रनाथ चुटकुले और व्यंग्य।
[8] मिश्र, रामविलास, हिंदी साहित्य का इतिहास।